# भारतीय हस्तरेखा विज्ञान

## (उद्भव एवं विकास)

प्रस्तोता

**डॉ. शुभम् शर्मा**

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय,

उज्जैन (म.प्र.) 456010

भारतीय संस्कृति में हाथ को महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है। हमारे धर्मशास्त्रों के अनुसार हाथ में देवता वास करते हैं।
अतः प्रातः काल कर (हस्त) दर्शन का निर्देश किया गया है।

कराग्रे वसते लक्ष्मी
करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दः
प्रभाते करदर्शनम्॥

## -: कर तीर्थ :-

"मूलेऽङ्गुष्ठस्य स्याद्ब्राह्मयं तीर्थं कायं कनिष्ठयोः।
पित्र्यं तर्जन्यङ्गुष्ठान्तर्दैवतं त्वङ्गुलीमुखे॥

हस्तसंजीवन दर्शनाधिकार 2/1

तयोर्योगे यथोङ्कारः परमं मङ्गलं भवेत्।
तथाञ्जलिविधानेन सर्वदा सर्वमङ्गलम्॥

हस्तसंजीवन दर्शनाधिकार 2/31

कनिष्ठादेशिन्यङ्गुष्ठ मूलान्यग्रं करस्य च।
प्रजापतिपितृब्रह्मदेवतीर्थान्यनुक्रमात्॥"

याज्ञवल्क्य स्मृति आचाराध्याय 19

# हस्त – सामुद्रिक

हस्तरेखा शरीरलक्षण शास्त्र का एक विषय है। चूँकि हम केवल रेखाओं का ही अध्ययन नहीं करते उसके पूर्व हस्तलक्षणों का अध्ययन अनिवार्य है अतः इसे हस्त सामुद्रिक कहना अधिक उचित होगा।

शरीर लक्षण शास्त्र के कर्ता कोई समुद्र नाम के ऋषि रहे अतः उनके नाम पर यह शास्त्र सामुद्रक या सामुद्रिक शास्त्र कहलाया। समुद्र मुनि किस काल में हुए यह कहना तो कठिन है परन्तु वे आचार्य वराहमिहिर से बहुत पहले हुए होंगे क्योंकि आचार्य की बृहत्संहिता के टीकाकार भट्टोत्पल ने पुरूषलक्षण एवं स्त्री लक्षणाध्यायों की टीका में समुद्र के अनेक श्लोकों का उल्लेख आचार्य के वचनों की पुष्टि में किया है।

जैसे पैरों के विषय में वराहमिहिर लिखते हैं :–

"अस्वेदनौ मृदुतलौ कमलोदराभौ, श्लिष्टाङ्गुली रूचिरताम्रनखौ सुपार्ष्णी।
उष्णौ शिराविरहितौ सुनिगूढगुल्फौ, कूर्मोन्नतौ च चरणौ मनुजेश्वरस्य।।"

भट्टोत्पल लिखते हैं :–

तथा च समुद्रः

"पादैः समासैः सुस्निग्धैः सोष्णैः श्लिष्टैः सुशोभनैः।
उन्नतैः श्वेदरहितैः शिराहीनैश्च पार्थिवः।।"

# उद्भव

❖एक ऐतिह्य (किम्वदन्ती) के अनुसार भगवान् लक्ष्मी नारायण को देखकर स्वयं समुद्र (क्षीरसागर) ने इस शास्त्र की रचना की।

❖महाराज जगद्देव (समय सन् ११५८) रचित संकलनग्रन्थ सामुद्रतिलक (सामुद्रिक शास्त्र) में उल्लिखित है –

पुरुषोत्तमस्य लक्ष्म्या समं निजोत्सङ्गमधिशयानस्य।
शुभलक्षणानि दृष्ट्वा क्षणं समुद्रः पुरा दध्यौ।। ३।।
इहेक्षणलक्षणयुतं तदपरमपि हन्त भजति श्रीः।
विपरीतलक्षणयुतस्त्रिजगत्यपि किंकरो भवति ।।५।।
इत्थं विचिन्त्य सुकरे स्वहृदि समुद्रेण सम्यगवगम्य।
नृस्त्रीलक्षणशास्त्रं रचयांचक्रे तदादि तथा ।।८।।
तदापि नारदलक्षकवराहमाण्डव्यषण्मुखप्रमुखैः।
रचितं क्वचित्प्रसंगात्पुरुषस्त्री लक्षणं किंचित्।।९।।
तदनन्तरमिह भुवने ख्यातं स्त्रीपुंसलक्षणज्ञानम्।
दुर्बोधं तन्महदिति जडमतिभिः खण्डतां नीतम्।।१०।।
श्री भोजनृपसुमन्तप्रभृतीनामग्रतो ऽपि विद्यन्ते।
सामुद्रिकशास्त्राणि प्रायो गहनानि तानि परम्।।११।।
सामुद्रमंगलक्षणमिति सामुद्रिकमिदं हि देहवताम्।
प्रथममवाप्य समुद्रः कृतवानिति कीर्त्यते कृतिभिः।।१३।।

# पौराणिक अभिलेख

शरीरलक्षण शास्त्र का सबसे प्राचीन उल्लेख हमें रामायण में मिलता है जब राम की मृत्यु का झूठा समाचार सुन सीता त्रिजटा से कहती हैं –

समग्रयवमच्छिद्रं पाणिपादं च वर्णवत्।
मन्दस्मितेत्येव च मां कन्यालाक्षणिका विदुः।।
आधिराज्येऽभिषेको मे ब्राह्मणैः पतिना सह।
कृतान्तनिपुणैरुक्तं तत्सर्वं वितथीकृतम्।।

रामायण युद्धकाण्ड 48/13–14

श्रीमद् भागवत महापुराण में भगवान कृष्ण के पद चिन्हों का वर्णन है –

पदानि व्यक्तमेतानि नन्दसूनोर्महात्मनः।
लक्ष्यन्ते हि ध्वजाम्भोजवज्राङ्कुशयवादिभिः।।

श्रीमद्भागवत 10/30/25

गरुडपुराण, भविष्यपुराण, विष्णुधर्मोत्तर आदि में तथा साहित्य के अनेक ग्रन्थों में सामुद्रिक शास्त्र का उल्लेख मिलता है।

# हस्तसामुद्रिक का इतिवृत्त

संपूर्ण शरीर लक्षणों में से हस्तलक्षण को महत्त्व जैन धर्म में अधिक दिया गया।

हस्तसामुद्रिक के प्रधान ग्रन्थ

- हस्तसंजीवन (मेघविजय गणि)
- कर लक्खण (प्राकृत भाषा)

हस्तसंजीवन की टीका में पूर्ववर्ती अनेक ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है। इसका रचनाकाल सम्भवतः सत्रहवीं सती ईसवी का अन्तिम भाग है क्योंकि ग्रन्थकार ने अपने भाष्य में विक्रम संवत् 1737 का उदाहरण दिया है।

# हस्तसामुद्रिक का महत्त्व

अङ्गविद्यानिमित्तानामष्टानामपि गीयते।
मुख्या शुभाऽशुभज्ञाने नारदादि निवेदिता।। ४।।

अग्रे हस्तः प्रशस्तोऽयं शीर्षादपि विशिष्यते।
साध्यन्ते पादशौचाद्या धार्मिक्यो येन सत्क्रिया।।५।।

सर्वाङ्गलक्षणप्रेक्षाव्याकुलानां नृणां मुदे।
श्री सामुद्रेण मुनिना तेन हस्तः प्रकीर्तितः।।६।।

हस्तेन पाणिग्रहणं पूजाभोजनशान्तयः।
साध्या विपक्षविध्वंसप्रमुखाः सकलाः क्रियाः।।११।।

मन्त्राक्षराणामोङ्कारे यथा तत्त्वं प्रतिष्ठितम्।
तथा सामुद्रिकस्यापि तत्त्वं हस्ते निवेशितम्।।१२।।

अभया जन्मपत्री यं ब्रह्मणा निर्मिता स्वयम्।
ग्रहा रेखाप्रदा यस्यां यावज्जीवं व्यवस्थिता।।१३।।

नास्ति हस्तात्परं ज्ञानं त्रैलोक्ये सचराचरे।
यद् ब्राह्मयं पुस्तकं हस्ते धृतबोधाय जन्मिनाम्।।१४।।

(हस्तसंजीवन, दर्शनाधिकार)

# हस्त सामुद्रिक तथा पाश्चात्य जगत्

वर्तमान में हस्तरेखा विज्ञान के जितने ग्रन्थ मिलते हैं उन पर पाश्चात्यमत का गहरा प्रभाव है। पाश्चात्य हस्तरेखा विशेषज्ञों में दो नाम बहुप्रसिद्ध हैं जिनके मतों का अनुसरण आगे किया गया –

- **जॉर्ज विलियम बेन्हम ...**

*इन अमेरिकन विद्वान् ने चिकित्साशास्त्र तथा शरीर विज्ञान का गहन अध्ययन कर अपने शोध द्वारा हस्तरेखा विज्ञान को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। इनके द्वारा सन् 1885 में लिखी पुस्तक **The Law Of Scientific hand reading** न्यूयार्क से 1890 में प्रकाशित हुई।*

- **काउन्ट लुइस हेमन (कीरो) ...**

*इंग्लैंड के आयरलैंड क्षेत्र में 1866 जन्मे कीरोनोमी (हस्त परीक्षण) तथा कीरोमेन्सी (हस्त रेखा अध्ययन) के प्रयोग के कारण कीरो के नाम से जाना जाता है। बहुत छोटी अवस्था में ही भारत आ गये। महाराष्ट्र में अपने गुरु श्री वेदनारायण जोशी से मिले। उनके परामर्श से हिमालय, उज्जैन तथा बनारस आदि स्थलों में घूमे। तीन साल पश्चात् ज्ञान प्राप्त कर लौटे। 1894 में इनकी पुस्तक **Language of the Hand** प्रकाशित हुई।*

## *guide to the Hand में कीरो लिखते हैं :–*

*"There are many people who would be amazed, probable to know that in antiquity it is older then Christianity itself, that two thousand years before the birth of Christ it had its origin & that way back in those regions where the snow tipped himalayas pierce the very heart of the heaven. This strange idea entered into men's minds that the soul some where & some how, wrote out its own history like the captive writing his name & legend upon the stones of his prison house to be read or not as the case might be.*

*If people want facts in this age of materalism, they should remember that there is almost no study at the present time that can bring more facts to prove its authority than this study of hindoo hermits & ancient seekers for a sign.*

*Orgument VI*

# आधुनिक भारत में हस्तरेखा विज्ञान

विक्रम संवत् 1972 (सन् 1915) में मुरादाबाद के पं. शक्तिधर ने बाईस वर्षों तक संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी, बंगाली तथा मराठी ग्रन्थों का अध्ययन कर संस्कृत में सामुद्रकशास्त्र नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में पाश्चात्य हस्तरेखा विज्ञान के सिद्धान्तों को भी प्रमुख स्थान दिया गया। कई स्थानों पर श्लोकों में अंग्रेजी शब्दों का जस का तस उल्लेख किया गया है। यथा –

मात्री सुरेखा विशदा गभीरा भौमालयं चेद्भजते यदा तु।
*आक्टूबरं* चैव तथा *सुमार्च* ब्रूयात्सुमासं सह भौमवारम्।।

(द्वि. खण्ड पृ. 37)

*हेल्थ*स्वरूपा प्रथमा हि रेखा प्रोक्ता द्वितीया किल *वेल्थ*रूपा।
*प्रॉस्पेरिटी* वै भणिता तृतीया रेखा कवीन्द्रैर्बुधसम्मता च।।

(तत्रैव, पृ. 60)

............

........विक्रम संवत् 1984 (सन् 1926) में रामनगर, काशी के राजज्योतिषी श्री कालिका प्रसाद शर्मा ने कामरूप कामाख्या में एक महात्मा से प्राप्त सामुद्रिक शास्त्र के ज्ञान को सचित्र सामुद्रिक रहस्य पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया।

# प्रमुख हस्त रेखाएँ

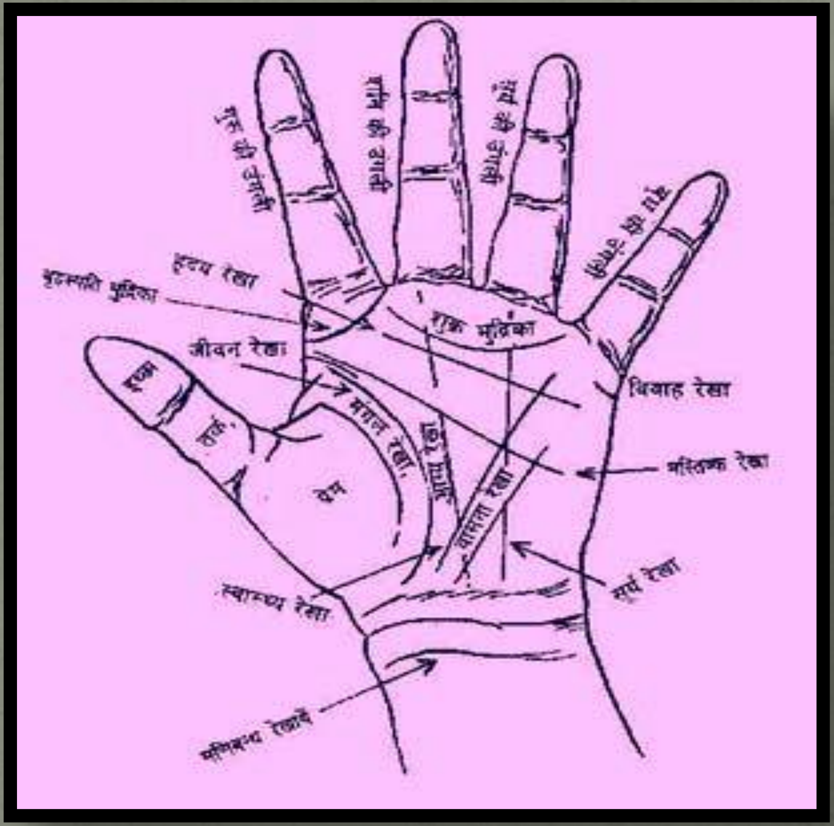


जीवितमरणं लाभालाभं सुखदु:खमिह जगत्यखिलम्।
कररेखाभि: प्राय: प्राप्नोति नरोऽथवा नारी।।

(सामुद्रतिलक १/१३५)

# पाश्चात्य मतानुसार हस्त प्रकार

1. प्रारंभिक **(Elementary)**
2. वर्गाकार **(Square)**
3. चमसाकार **(Stapulate)**
4. दार्शनिक **(Philosophic)**
5. कलात्मक **(Conic of artistic)**
6. आदर्श **(Psychic)**
7. मिश्रित **(Mixed)**

वर्तमान में पाश्चात्य परंपरा पर आधारित ग्रन्थ अधिक लिखे गये हैं। यद्यपि कीरो के उल्लेख से ज्ञात होता है कि यह ज्ञान भारत से ही पश्चिम में पहुँचा। विड़म्बना है कि हमारे ज्ञान को हमने तो भुला दिया पर औरों ने उसे महत्त्व दिया और आज उसी ज्ञान को हम पाश्चात्यों का दिया हुआ मान रहे हैं। आवश्यकता है कि प्राचीन पांडुलिपियों की खोज तथा उनका अध्ययन किया जाये ताकि हमारा देश फिर से विश्व गुरु के गौरव को प्राप्त कर सके।

।।धन्यवादः ।।